Hindi MS.
294.592
B575

441

भगवतदशम स्कन्ध भाषा; नंददास तथा हरिसुख द्वा० कालि० अनु० १८७५ वि० लि०
२६५ पत्रक॥ ल० भ० १३ पं० प्र० पृ०

ह० ल०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दशमस्कंध भाषा (पद्य)
नंददास (हस्तलेख)

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri Vidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An Gangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vedika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पित्रक२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ पुनमः॥ ॥ अथ दसमस्कंध नासानंददास कृ
त ॥ दोहा ॥ । नवलछिनकरी लछिजौ दसम अध्याय परथ
म दवंदितोषपम तिहिं श्रीकृस्न अध्याय अनूप ॥ १ ॥ चौपई ॥ परमविचित्र
मित्र इक रहै ॥ कृस्न चरित्र सुन्यौ सो चहै ॥ तिन कहि दसमस्कंध जु
आही ॥ भाषा करि कछू बरनौं ताही ॥ सबद संस्कृत के है जैसे
मो पै समझि परत नहीं तैसे ॥ ताते सरल सु भाषा कीजै ॥ परम ईम्र
तसी जैसु पदीजै ॥ ३ ॥ ता सुनंद कहत हैं ताहा ॥ अहो मित्र रातिम
ति कहा ॥ मा में बडेक विजन रुजै ॥ ते वै नाहीं न अरुज हु सरुजै
॥ ४ ॥ ताहां हो कौन निपट मति मंद ॥ चौनाये पकरव हूवे दंद ॥ अ
नु महामति श्रीधरस्वामी ॥ सब ग्रंथन के अंतरजामी ॥ ५ ॥ ति
न कस्यौ पह नाग वनि जु ग्रंथ ॥ जैसे दूध उदधि कौ मंथ ॥ मंदर गि
रि सम जति जहां ॥ रनु तु को कौ है नटा ॥ ६ ॥ ता में यह श्री दसमस्कं
ध अध्याय चव रस कौ रस मय यास्य धु ॥ लिहि विधि कि हीं कि हि विधि है
का

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कछुकाकोहताहीअनुसारौं ॥ कौंसिद्धांतरतनउद्धारौं ॥ ७ ॥ सिद्धकहू
नहैतोपद्धअैसैं ॥ अहोनंदतुमकहनहौजैसैं ॥ अैसैंजथासकति
कछुकीजे ॥ अमृतकीराकबूंदहीजीजे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जोगुरुगीर
धरदेवकी ॥ सुंदरदपादरेर ॥ सुगसकलपिंगलपदैं ॥ वंगुवदैगिरमे
र ॥ ९ ॥ चौपई ॥ प्रथमकहौंनवलछिनकौंनतिनकहूनीकेसमझ
महौंन ॥ जबलगीईनकै भेदनजांनैं ॥ आश्रयवस्तुसुंक्योंपहिचांनैं
१० ॥ नंदकहननोसुनिनवलछिन ॥ जैसेवरननवडेविचछन ॥ सर्ग
विसर्गस्थांनरूपोषन ॥ ऊतिमन्वंतरनपगनतोषन ॥ ११ ॥ ईकनिरो
धअरुमुक्तिसुंदछिन ॥ आश्रयवस्तुकेएनवलछिन ॥ महदादि
कजेकरनवर्ग ॥ तिनकीप्रिष्टिजुकहीयेसर्ग ॥ १२ ॥ काजेप्रिष्टिय
हविष्वजुआदि ॥ विदूषविसर्गकहनहैंताही ॥ सुर्यादिकमर्जा
दोवतांन ॥ ताहीस्थांनकहनजेजांन ॥ १३ ॥ जद्यपिनकानतोव
हूलोषन ॥ ताकीरछ्याकहीयपोषन ॥ साधुअसाधवासनाजाह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०)
२

कनमविनसतिसमकिलीनतहां ॥१४॥ समीचीनधर्मकीप्रहरति सोकहीं
येमनवंनरहनी ॥ मुचुकुदादीनपनिकीकथा ॥ सोईसांनकथाहै
जहां ॥१५॥ दृष्टनपनीकोहरनअबोध ॥ बुधजननतासोकहनी नीरोध
अस्वरूपकोत्यागनिजुगति ॥ स्वस्वरूपकीप्राप्तिमुमुक्ति ॥ र्ह ॥ ई
नलछिनकरीलछिनजोई ॥ आश्रयवस्तुकहावैसोई ॥ सोर
सयैइहीदसमनिकेतु ॥ प्रगटअहीनकानिकेतु ॥१६॥ दसममधीजु
निरोधवषांन्यो ॥ दृष्टनपदलनसवहीजांन्यो ॥ अवरनिरोधवेद
जोआहि ॥ श्रुतिअद्भुतनसुनीलैनाहि ॥१७॥ नक्तिनिरहितरा
गीविषयेनिरोध ॥ इतहीकृस्नसुषतेअवरोध ॥ इहवेममधिप्रा
पतिकरै ॥ ईकनीरोधरहिविसरै ॥१९॥ ज्योंव्रजवासिनमोछिति
॥ मधुरमुरतिविनजवन्यकुल ।
बाई ॥ ब्रह्मानंदवहूरीलेजाय ॥ अवरनिरोधवेदसुनी
में ॥ नवफिरीहहूयोव्रजहीआने ॥२०॥ २
जद्यपिकोटीब्रह्मांडकैक
नत्र ॥ वरनततीनकोवदेवीचित्र ॥ मित्र ॥ व.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०
उ

मणिवंश॥ नीके कहे हैं रहे न हीसंस॥ २९॥ अरु जेउ नयबे सके भुप
तिन के जे जे बुरितन्ह अनूप॥ ते सब पाले अछे वरने॥ मन हरने जे
गमांतन करैने॥ अरुजदु धर्मसीलको वंससो पुन्यनू मकरीनते
प्रसंस॥ ३०॥ धर्मसा सत्रव तितिनिर्मल हाधो॥ पीतु हितन्ह अपनो जो
वन दियो॥ तिहि कुलमेंई अउर अवतारे॥ अंसकलाविभूतिक
तिनरै॥ ३१॥ मछकछअवतरवी नावन॥ भुतनिके नावनहनो
नांवन सो पावन तिहीज दूकुलमें आं हो॥ कीनी जे जे करमंभुत
य॥ ३२॥ ते विमलरै सुमोसोकह्यो॥ हे मुनीसतुम अलसनगे
कल्पमुनान वादके विषै॥ सबअधिकारी अपनी अपेखे॥ ३३॥
मुक्ती तेकगावत रसभिने॥ मोइ छगादिक त्रत्मां करीहीने मु
कनीको नवओ पधइह॥ जातेसंसतरोगनरहै॥ ३४॥ बिघडी
जनमन अतिअभिरांम॥ जातेसबहीरसनिको धाम॥ किन
पमुघहिमूहरपको न॥ कहइकहरीगुन नेनमुनोन॥ व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१०
२

तौ ॥ अरु तिन कै नरता संहरतौ ॥ २१ ॥ परम सनेह नक्ति है जाकैं ॥ सोऽ
थिरता कु रमांनता कैं ॥ ज्यौं जलसु मति सुषम जा पैष्यौ ॥ सुतई थिरन
रि नाहीं न लैष्यौ ॥ २२ ॥ ललित लाल की लाल पटांनी ॥ सो वह नृप
कि पासी जांनी ॥ अब सुनी कथा विषयक री नी रोध ॥ जह पि अन
त अपंडीत बोधु ॥ २३ ॥ सो नरवर वक्ता नांहीन फरै ॥ जब हृदी मांन
त न अनुसरै ॥ अवनी रोध नेट जो आहि ॥ रसलीला नीमलीवु
कु चाहि ॥ २४ ॥ अब सुनि नक्षपरी छत वातें ॥ श्री भागवत प्रगट है
जातें ॥ कंदर हरी मुरति जो आहि ॥ उदर मध्य सो देष्यौ वाहि ॥ २५
सब गाकु षपरीष्यत लष्यौ ॥ ता तैं नाम परीछत नयौ ॥ २६ ॥ वि
सरैं जाहीं अहार विहारा ॥ केवल हरी गुन श्रवन अहारा नै से
हीर्ते कम वक्ता वनै ॥ श्री सुषदेव परम रस सांनै ॥ २७ ॥ कृष्ण ला
त लीला अनुरागी ॥ ब्रह्म तैं नाक सिन ये वैरागी ॥ तिनि सौं प्रश्न परी
छत करी ॥ नवमी चक्र ष्ण कथा रस भरी ॥ २८ ॥ हो प्रभु तम करा गव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पपुष्पसोईजुकमेंदीठीदै॥ कृस्नगुनानबादनहीजावै॥ हमोरतो
हरीकुलकेदेव॥तुमसबनीकेजानौतेव॥३६॥ अर्जुनआदी
पीतामहमेर॥जबकुरुसेनासागरघेरे॥ अमरनिकरीजुनजीने
जाही॥ नीषमाटीकअतिरथीतिनमांही॥३७॥ तेइतांहांनिछिनि
लनाये॥ अपनीजातीकेनछीनहारे॥ तिमिइकजतिमीनकी
आही॥ सतजोजनवीसतरहजाहि॥३८॥ ताहीमीलतजोज
नचरलहीये॥ ताकोनामतीमंगलकहीये॥ तिनकरीमाहा
रत्यपसोई॥ जोदेषेसोईवराजहोई॥३९॥ तांहांश्रीकृस्नसुनव
कानये॥ कवधोतिनिहिपारलैगये॥ अफकेवलतेक्रनहीत
रे॥ मेरेकतनकेरषवारे॥४०॥ द्रोणपुत्रकोबानहिवन्यारो॥ अ
ग्नितैतातेरातोजारो॥ जबआयोतवमसबामेरी॥ दोरीसरनग
ईतिहीकेरी॥४१॥ मेरहीनकरीबहरीकसे॥ कुछितऊदरदरीमेपे
से॥ कुरुवनीकीतोपंततीमात्र॥ पांडवनकीनक्तीकोयात्र॥४२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०
४

सोदहीमेरोअंगमुहाइ॥ नअवनयोनवफेरीजवायो॥ ताकेच
रं.अब्भुतमपजीते॥ हेसर्वगीसुनावहुनीतें॥४३॥ नमकहीब
हसंकर्षनअर्ने॥ प्रथमहिकह्योदेवकीगर्ने॥ वहुरिजुनाहीज
सौ॥ देहानरवीनकसेवनें॥४४॥ अरुईश्वरनगवांमुमुकुंद॥ प
रमानंदकंदसुषछंद॥ नेंकाहेतेपितुगेहतें॥ व्रजीआयेस्क
षवनुहेततैं॥४५॥ व्रजवसिकवनकवनपूनकर्म॥ कीनेपरम
धर्मकेमर्म॥ सुनमषपूरीआपनंदनंद॥ वरषैकवनकव
नआनंद॥४६॥ अरुमाछ्यानमातकोम्वान॥ सोबहीकंसद्गा
त्योकीबात॥ कितेकीवरसहुरावतीवसे॥ कितिकितलि
नललनामेंलसें॥४७॥ जदुपितज्योंहेमेजनअन्न॥ नदपिनहे
हेमोतननषिन॥ नवमुषकवलनहरीवारिसार॥ वनिहैपरमअ
मृतकिधार॥४८॥ पांनकरनअसरसअनपास॥ कोकेंछुधा
कवनकैप्यास॥ नाराजाकोकरिसनमान॥ बोलेवेयासिकि ४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भगवान ॥४९॥ कहि कीधन्य धन्य नृपसत्तम ॥ नीकैं करि निरि
क्षतमति उत्तम ॥ जातैं कृष्ण कथा रस नई तासैं जी तन्मति रति
नई ॥५०॥ ब्रह्म जु कृष्ण कथा की जहां ॥ वक्ता श्रोता पृछक तहां ॥
पावन करैं अवनि कों ऐसैं ॥ गंगाजल धारा जग जैसैं ॥५१॥ दो० ॥
निगम कल्पतरु को सुफल वृजीजीन वकुलही जाहि कबूनल
गे रस रंग मंगो: ॥ सुंदर श्री सुपनाहि ॥५२॥ चौपई ॥ नृपरूपवदी
श्रम्रवीकारी ॥ भइ जब भूमि भारकरि नारी ॥ तब पहुंगाय रूपध
रधरनि ॥ क्रंदन करती श्रुसुवन नरति ॥५३॥ विधि सौं जाय कही
सब बात ॥ सुनि कमलभ स्योक वलकोतात ॥ श्रमरनिकरी संक
र संगलये ॥ नीर छुरसागर कै गये ॥५४॥ देव देव पुरुषोत्तम तमज
हा ॥ स्तुति करी बिनतीकिनि तहां ॥ गगन मै भई देव की धुनी
सो ब्रह्मा समाधिमै सुनी ॥५५॥ सुनि कबोल्यो अंबजु तासन ॥ स
नी कृष्ण मगम न सौनै नात ॥ कृपाल इवितंवनकरो ॥ जदूकुल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०
५

बीचैं जाय अवतरौ ॥५६॥ श्री बसुदेव धाम अवतीरांम ॥ प्रगटै
श्रीगोप्रभु पूरनकांम ॥ सहस्रबदन जसै स्दाता ॥ हौ है प्रभु कौ
अग्रज भ्राता ॥५७॥ अरु जो जोगमाया गुनमई ॥ ताहू कौ प्र
भु अग्या पाइ दई ॥ ईहि विधि विधि बुधनि सौ कही ॥ सुन्य अग्या सासि
न कीनी मही ॥५८॥ मथुरा जादवन की रजधांनि ॥ श्रीगोव्यंदचंद की
मांनी ॥ जिति कथ्या ही ब्रह्मांड अनेक ॥ अभसनी करी हरनी बस
तीत क ॥५९॥ जिहि ब्रह्मांड महापुरी लसै ॥ पूरनब्रह्म बंद ना
हां बसै ॥ सुरसेन जादूव एक नांम ॥ परम भागवत सब सुष धांम
६०॥ ताके निर्मल निगम सरूप ॥ प्रगट्यो सुत बसुदेव कन्प्र अनुप
जाके जनम मन अमृत नग मैं दूंदभी बाजत नवगर बगर मैं ॥६१॥ पहलौ
लौ अपनौ परिकर जितौ ॥ प्रगट हूं तो यजगपजयपति तौ ॥ नव
श्रीकृष्ण अवतार हे आय ॥ सिद्ध करै भगतन के भाय ॥६२॥
देवक जादव कैई क कन्या ॥ देवमई देवकी सुध न्या ॥ मे बस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नलबीन नरीमुनमरी ॥ आंनिवूसविघ्याअवतरी ॥ ६३ ॥ स्यांसव
रननतनअसकछु सो है ॥ ईद्रनीलमनिकीदूनिको है ॥ ६४ ॥ सो
ललहलहलतई महीयो ॥ जमुबिधिपुतरिमोजिपरियो ॥ व्या
हनजोगजानिछबिछई ॥ सोदेवकीबसुदेवहिदई ॥ ६५ ॥ नयौ
बिवाहपरमरंगभीनो ॥ देवकदहूनदायजोदीनो ॥ घटस
तस्यकेवनकेनये ॥ गजसनवारिमाहाछबिछये ॥ ६६ ॥ दहू
दसहैससुनगकेकान्ह ॥ कनककरेनपजरेपलन ॥ बरवनी
तरुनिरंगभीनेरीमंदलकंदलवजे ॥ उग्रसेनदेवककोभाना
ताकोपुत्रकंसद्विष्याना ॥ ६७ ॥ भीनोनवकुंकुमकेरंग ॥ कं
वनरथअनेकनिसैहसंग ॥ नगनीरूपकोस्वारथिनयो ॥ प्रीति
बिवसजुरूरिलोगायो ॥ ६९ ॥ बानीनइगगनमैमुद रे रे कंसमह
मतिमुद ॥ जाकोतुनयौजातहेजंता ॥ अटबुंगरअजुतेरोहंता
७० ॥ सुनतहीपापरूपवरकंस ॥ बायगहीदेवकीनसंस हंदरा
भी ... बीनबीनिसलनदार ... दबरातविद्या
हलमै ...

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०) वदनदिमन नयो अमै ॥ राहु कै छिपन छिपा कौ रजैमैं ॥ ७१ ॥ कादि
६ न दु गमार न कुनयो ॥ आंनक दूं दभिनवन हां गयौ ॥ माहात
नजिनिक रि अम काज ॥ जा काज नै होय जग लाज ॥ ७२ ॥ अग
नी है नी अस पर समै ॥ तुव डुगमान करि अस नै ॥ जो न
कहु ही मरन मय नारी हो अपनी करि हौं रघवारी ॥ ७३ ॥ नो व
हम रनन टिग है जाय ॥ विधि नां लिष्यो ललाट बनाय ॥ अ
व हिमरो कि वर षेसन दिनै ॥ तू हैन को ऊकान दलीनै ॥ ७४ ॥
नाते पापाचार न करिये ॥ छिन इक सुष वदु लो दूष न रीपे
पुनि ति ही दूरी जबही परस पैं लवरी अवहीर दे का उधरै ॥
७५ ॥ ज्योंत न जो कनणा नि अनु सरै ॥ आगे गहि पाछै परि हरै
तेसै करम विविध सहज तंत ॥ देह धरत दूषन रत अनंत ॥ ७६ ॥ द्री
न बात सुकं स कौ मानै ॥ असल भाव षलि छिष मानै ॥ न बद
मुरेव दया ही धरावे ॥ सां मब कमक दि कहीम मझावे ॥ ७७ ॥ ६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पहैलहन अनुजाबरवाला ॥ सुतरी सी छिछिर छीरमाला ॥ तकार अगु
न नमंगलकालू ॥ जानैं न बड दीनदूयालन ॥ ७७ ॥ महपिनुला कै
ऐवक श्रापी ॥ केवल नपापिमा हामरावी ॥ जीपट हीला कोनीग्र
ह जांम्यौं ॥ तब बसुदेव ओरमनितठराम्यों ॥ ७८ ॥ नियदीसुत अ
ह पिवोड्रिढाये ॥ मीच के मुषतें पाहिमंली छीडाक ॥ जवमेरै
ऊपरीजरै: ॥ डिगकेरहूरी केजरै ॥ तवें बसुदेव विहैसि केव
है ॥ हेराजन रंच्छक तवहै ॥ ८० ॥ डरनो कहीआठपग नेको न
हिपा कोन ही ॥ औरगारनकों होतो हीदेहों सगरेही नाने ॥ छिपेक
हनयहनै पैगानै ॥ ८१ ॥ करिवानि तौ जिसुबसुदेवकी ॥ छाडि
दई तब हसी देवकी ॥ बधमही कीरनि मती सुतनयो ॥ वसुदेव
हीतिये हीगयो ॥ ८२ ॥ सनि पुनदुअन तैडरतों ॥ तातनी दिन
नवपरी हरसो ॥ अरुसाधनि केदु:सहकोन ॥ जिनकेनहीमम
तामतिभ्रौन ॥ ८४ ॥ घरतेजाहूदेवइहम्भरनो ॥ दीजीअमोहीम ।

जवमेरैउपजैहिगैतात: ।विधाताकीअनेकहैवात

८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०
७
ह••गरमैं ॥ ५५ ॥ बस्यौ सदन परी बदन नंदे दास ॥ नीबनकौ कछू न हीबी
सखास ॥ वसुदेव घरी सौ जोनू पायौ ॥ नारदन बहीकंस पैं आयौ ॥ ५६
कंस कै सांति हीप जोन अवें ॥ देव काज नौ विगरैनो सवै ॥ आनी कह
तासौ सब बातै ॥ अहो कंस कछू समझत घातै ॥ ५७ ॥ वसुदेवादिक
जादं वजीतै ॥ गोकुल मैं नंदादिक जीतै ॥ पहलो सब देवन आ
ही ॥ रोजनरी वकनिनीपनी पाहि ॥ ५८ ॥ कही के गयो बबनई ही
बोधि को ॥ परघर घाल कवाल कविध को ॥ नबहीसु सिसु फेरी म
गायो ॥ वसुदेव नाही न ये हि आयो ॥ ५९ ॥ हासी घूट की[illegible] पजीम
या ॥ जे अस नपनीन को कोदया ॥ देवकी बीपै विरूक[illegible]वन रीहैं ॥
मिलेव धूको ईछम करी है ॥ ६० ॥ पही लो कालने मि हो हूतो ॥ विष्क
पदा को बैरी सनौ ॥ अबकै औसो जनननौ जानौ ॥ विष्का हिग नंबी
वहीहनौ ॥ ६१ ॥ नवबस रे वदेवकी आनि ॥ पापनि मुझ्ट संघत्ना
वनिराख्यौनि कट वी कर अस ठोर ॥ जांहां कोई जांनन पावै और ७

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र। जोई जोई बालक रूप जनजात ।। सो सो हनै न पूछ बात बिसम
नम की संका करै ।। मतिडी नहीं मैं है संवरै ।। ५३ ।। वं धुमी त्रनाद
वहे जिनै ।। बल करी बंधन कीनै तीनैं ।। उपसेनि अपनो महतारो
सो वां ध्यो दीनो दूष भारो ।। ५४ ।। माहाबली अरु माहा मरखस ।। रा
जान यो मधुपुरी कंस ।। ५५ ।। दोहा ।। नंददासा मनि कौ न पवर
यो प्रथम अध्याय ।। जाकैं रंचक सुनन तसव ।। करम कषाय नस
य ६६ ।। ५६ ।। इति श्री भागवते माहापुराणे दसम स्कंधे नंददा
स भाषा कृते प्रथमोध्याय ।। १ ।। अब स्कंनी हितिय अध्याय ज
हं ब्रह्मादिक सम अध्याय ।। करी है गर्न स्तुति माहा मनि कि विनवत न
दिषराय ।। १ ।। चौपई जहैं नी वधु रेई बुरै ।। तैसब आंनी कंस पै जुरें
अघ बक कबकी यत नब अरी ष ।। त्रणावृत नषर कैसी न छ ।। २ ।। मांगधज
रासंध वल अ धु ।। तासौं आदि सधुर सम संध ।। जादौंनि कौ देन दुष
लागे ।। तेस जादौं सबि देसन भागे ।। ३ ।। केइ करी है तांहि न अरसा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दशम
८

॥ कुसटिकअनमनमांनैं॥ देवकीकेषट्सिसुजबकंस॥ हतैम
हाबलमाहातसंस॥४॥ सप्तमगर्भनविस्नकोधांम॥ भयोअनंतजा
हिहैनांम॥ देवकीतांहांअतिनपरकासी॥ हरषसोषदोऊमिलिअ
भासी॥५॥ जैसेप्रातकंवलकीकली॥ कछुकफूलीकछुनांही
नफूली॥ पट्कुलकोदुषदोषीभगवांनें॥ आतुरनयोजोंनी
मनजानि॥६॥ बोलीजोगमयामनहरनी॥ तासुवचनुसबबा
तैंबरनी॥ हेभद्रेबड़भागनीमाहा॥ भागमहिमतबकहीये
कहा॥७॥ जातेतूमअवगोकुलजैहैं॥ देषतनीरवधीसुषके
हैं॥ गोपिगोपनीकरीअतीमंडित॥ जानेनीस्यानंदअमंदित
८॥ राजतगोपराजतहैनंद॥ मुरलीधरैसोंपरमांनं॥ ताकेघरीबसु
देवकीघरनी॥ हरीरहतीरोहनीबरबरनी॥९॥ देवकीजोगरभ
रतजुआही॥ रोहनीताहीगर्भलैजाय॥ गरभचरनसंकाजीन
करै॥ मेरोअसनकबहूनमरै॥१०॥ नंदनंतरनीहोजटरअनु ८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१॥ ऐसेहैहमपरीपुरनरूप॥ तउहीगोपनदंकधांममकिगेह
नीजसमनीनामम॥११॥ तनहानांममात्रहोयकैं॥ करीसबका
जसबनिनोयकें॥ ह्वैदेमुविवैरवहूनांम॥ पूरनकरीहैसब
केकांम॥१२॥ नवानेवांनीबुसांगीमहानी॥ कालीकामा
यनीहिमांनी॥ ऐसेसवनुकीअम्यायाय॥ मायानूरनमहीन
लआय॥१३॥ रोहिनीगर्भवाघैदेवकीगर्भ॥ आंस्योंकरयैत
वहीसोअनै॥ नगरमैबगरबगरह्वैगयो॥ देवकीगर्भवीस
स्रतनयो॥१४॥ तवईस्वरसबअंसनिनरैं॥ आंनकदूंदभि
मनीसंचरै॥ निहिछिनवसुदेवमनीसपमोहै॥ मानसमान
परतनहीजोहै॥१५॥ मनिहांकरिदेवकीमेधरैन कछुबातमा
मंधहीरैरै॥ ज्योंगुरुसिष्यविगथकेहेतहूदिगतवस्कैदयाव
रीदेत॥१६॥ हरिगर्भधरीदेवकीमनीमांहे॥ आपनेरूपआप
नेहीमोही॥ अपरिघरहीघरआजासी वाहरीतनकनह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२० व कालौ ॥१७॥ जैसे घर मे दिपग जोती ॥ जीत रि जग मग जग म मगा होति
९ श्ररु जो वचन मे सर सुनी ॥ परऊपगार करत न हीं रति ॥१८॥ जेसे
जगमगा नहीं जहा ॥ आयो कंस पाप मती न हां ॥ करहत की मे रोहं
ना जोयु ॥ अब के निश्च आयो सोय ॥१९॥ याने पाछेडु तीन च्यैं
सी ॥ राजिनी ने जरा सिसा वैसी ॥ को कूध्यम कं ज्येइं हां काला ॥
सु सगु धिनी व हू सो वा ला ॥२०॥ या कौ वधन श्रेय कौ करै ॥ आ
सु कीरति सब मे पति हरै ॥ अरु त्सो धिकू सब कोई करै ॥ मरै म
हारो रव मे परै ॥२१॥ ई हां प्रकार विचार ही आई ॥ फिरी गिगयो
घर पर ीक छू न व साई ॥ निसदिन जन म वती छा कै रै ॥ थर थर
डरै नी दन हि परै ॥२२॥ वे वन ऊठत चलत तव की रहै ॥ मती ते दि हि
ते सुहे उ दिग है ॥ अंबर झा री सेज पर सोवै ॥ नोजन करत सी नुट
करावै ॥२३॥ बेर नाव जी सम्रती व दी गयो ॥ सब जग जाय वि
द सुमय नयो ॥ ताही छिन संकरस्य जसा रद ॥ अब रश्रमर क ९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मुनीबरनारद ॥ २४ ॥ आवेद रसनहित अखरै ॥ अति मुद मै रे [illegible]
नेनेरै ॥ जाकै उदरम धी जग सबै ॥ सो देव को जटर मे आवै ॥ २५ ॥ के
ई रवि से केई ससी से गये ॥ आगे दीन दीया से नये ॥ देव की [illegible]
लमलन अैसे ॥ रतनम जुषांनी वनगजैसे ॥ २६ ॥ करी दंडुवनाम
हा मुद नये ॥ इक ही वेर सबै पाप निपरै ॥ बुनि बुनि रत्नी बरनन
ली पटै ॥ कोटनि केट जु को टीकट पटै ॥ २७ ॥ बनी जुरतन मुकट
की जोती ॥ जनु श्री हर की आरती होथी ॥ [illegible]गढ़ कंटथे [illegible]सम
रे ॥ अंजलु जो रअसकती अनुसरै ॥ २८ ॥ कहत की अहो सम्स मं
कल्पसब बिधि सम्पनी म्प बड कल्प ॥ तुम ही प्रपन नये हूं मस
बैर स्याक रोहमारी सबै ॥ २९ ॥ जो कहहूं कोतु महूं सदं [illegible] मक
जगनायक अरुफलके दायक ॥ ३० ॥ क्यो बाललनी लानैसे बे
नतां हां तुम मुनी हे कमल दल नैन ॥ तुम पमेश्वर सब के नाथ ॥
बिघ्न समस्त तुम्हारे हाथ ॥ छिनक मे परग्रीनक से संघारा । ऊनं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative